

अंकद्विपंक्तिक सहसंबंध (Point-Biserial Correlation)

अंक - द्विपंक्तिक सहसंबंध बहुत कुछ द्विपंक्तिक सहसंबंध के ही समान है क्योंकि इसमें भी दो चर में से एक चर दो भागों में विखंडित है। अंतर केवल इतना ही होता है कि अंक - द्विपंक्तिक सहसंबंध में दो में से एक चर का द्विभाजन वास्तविक श्रेणी में नाहोके कोई स्वेच्छाचारी श्रेणी में होता है। वास्तविक द्विभाजन के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं - पुत्र - स्त्री, जीवित - मृत, निष्ठ - अनिष्ठ।

अंक - द्विपंक्तिक सहसंबंध के परिकलन के लिए यह आवश्यक नहीं है कि द्विभाजी चर प्रसामान्य रूप से वितरित हो। चूंकि अंक - द्विपंक्तिक सहसंबंध प्रसामान्य वितरण के बंधन से मुक्त होता है। इसके प्रयोग एकत्र विश्लेषण की परिदृष्टि में भी अधिक होता है। अंक द्विपंक्तिक सहसंबंध ज्ञान करने का सूत्र इस प्रकार है -

$$r_{pb1} = \frac{M_p - M_q}{J_{pq}}$$

r_{pb1} = अंक द्विपंक्तिक सहसंबंध

M_p = द्विभाजी चर के उच्चतर समूह यानी वह समूह जो श्रेष्ठ गुण दिखता है का माध्य

M_q = द्विभाजी चर के उच्चतर समूह यानी वह समूह जो श्रेष्ठ गुण दिखता है का माध्य

J_{pq} = पूरे समूह (उच्चतर तथा निम्नतर समूह) का मानक विचलन

20

SAGAR

Page No. _____

Date _____

$p =$ पूरे समूह में उच्च समूह का
समानुपात

$q =$ पूरे समूह में निम्न समूह का
समानुपात ($q = 1 - p$)

यदि कोई शोषकर्मी शरीर के वचन
तथा यौन (Sex) के बीच में सहसंबंध
ज्ञात करना चाहता है तो वह यौन पुलक
तथा महिला दो भागों में बाँट देगा जो
एक वास्तविक द्विभाजन होगा और ऐसी
परिस्थिति में प्रायः आँकड़ों पर अंक
द्विपंक्तिक सहसंबंध आसानी से ज्ञात
किया जाएगा।